IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

केन्द्रीय विश्वविद्यालय एवं राज्य विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन

श्री भारतेन्दु विमल[1] एवं डॉ. विवेक नाथ त्रिपाठी[2]

शोध छात्र, शिक्षा विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ

सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय , लखनऊ

सारांश (Abstract)

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य केन्द्रीय एवं राज्य विश्वविद्यालयों के प्रशिक्षु शिक्षकों के समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में समावेशी शिक्षा सामाजिक न्याय, समानता एवं सहभागिता को सुदृढ़ करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन चुकी है, जिसमें शिक्षक की भूमिका अत्यंत निर्णायक होती है। इसी संदर्भ में, शिक्षक-प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण का अध्ययन विशेष महत्व रखता है, क्योंकि उनके विचार एवं मान्यताएँ भविष्य की शिक्षण प्रक्रियाओं को प्रभावित करती हैं। अध्ययन में वर्णनात्मक शोध विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण अभिकल्प का प्रयोग किया गया। नमूने के रूप में उत्तर प्रदेश के लखनऊ स्थित केन्द्रीय एवं राज्य विश्वविद्यालयों के 100 प्रशिक्षु शिक्षकों का चयन साधारण यादृच्छिक पद्धति से किया गया। डेटा संकलन हेतु डॉ. विशाल सूद एवं डॉ. आरती आनंद द्वारा निर्मित मानकीकृत मापनी का उपयोग किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए माध्य, मानक विचलन एवं स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों ही प्रकार के विश्वविद्यालयों के प्रशिक्षु शिक्षक समावेशी शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, किन्तु केन्द्रीय विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षकों का दृष्टिकोण अधिक सुदृढ़, सकारात्मक एवं एकरूप पाया गया। हालांकि, केन्द्रीय एवं राज्य विश्वविद्यालयों के प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण में जो अंतर पाया गया, वह संभवतः उपलब्ध संसाधनों, प्रशिक्षण की गुणवत्ता, अनुभव तथा शैक्षिक वातावरण के कारण हो सकता है।

मुख्य शब्द (Keywords) समावेशी शिक्षा, शिक्षक-प्रशिक्षु, दृष्टिकोण, तुलनात्मक अध्ययन, केन्द्रीय एवं राज्य विश्वविद्यालय

प्रस्तावना (Introduction)

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं रह गई है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, समानता तथा समावेशन को सुदृढ़ करने का एक महत्वपूर्ण उपकरण बन गई है। इसी संदर्भ में समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) की अवधारणा ने विशेष महत्व प्राप्त किया है, जिसका उद्देश्य विविध क्षमताओं, पृष्ठभूमियों एवं आवश्यकताओं वाले सभी विद्यार्थियों के लिए समान एवं न्यायसंगत शिक्षण वातावरण सुनिश्चित करना है (यूनेस्को, 2017)। समावेशी शिक्षा इस सिद्धांत पर आधारित है कि प्रत्येक बालक अद्वितीय है और उसे उसकी क्षमताओं के अनुरूप सीखने का अवसर मिलना चाहिए। यह दृष्टिकोण न केवल विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए, बल्कि सभी विद्यार्थियों के लिए लाभकारी माना जाता है, क्योंकि यह सह-अस्तित्व, सहयोग तथा सामाजिक समरसता को बढ़ावा देता है (ऐन्सको, एम. 2005)।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में समावेशी शिक्षा को नीतिगत स्तर पर विशेष महत्व दिया गया है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम (2009) सभी बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने की गारंटी देता है, जबकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) समावेशी एवं न्यायसंगत शिक्षा प्रणाली के निर्माण पर बल देती है, जिसमें विविधता को स्वीकार करने और बाधाओं को दूर करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है (शिक्षा मंत्रालय 2020)। हालांकि, समावेशी शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन में अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं, जिनमें संसाधनों की कमी, प्रशिक्षण की अपर्याप्तता तथा शिक्षकों के दृष्टिकोण से संबंधित समस्याएँ प्रमुख हैं। विभिन्न अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि शिक्षकों का दृष्टिकोण समावेशी शिक्षा की सफलता का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है (एव्रामिडिस और नॉर्विच, 2002)। यदि शिक्षक समावेशी शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, तो वे विविधता को स्वीकार करते हुए प्रभावी शिक्षण रणनीतियों का उपयोग कर सकते हैं।

इसी क्रम में, शिक्षक-प्रशिक्षुओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि वे भविष्य के शिक्षक होते हैं और उनके दृष्टिकोण एवं विश्वास आगे चलकर कक्षा-कक्ष के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। शर्मा, फ़ॉरलीन और लोरमैन (2008) के अनुसार, उपयुक्त प्रशिक्षण एवं अनुभव शिक्षक-प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण को अधिक सकारात्मक एवं समावेशी बना सकते हैं।

भारतीय संदर्भ में किए गए अध्ययनों से यह भी ज्ञात होता है कि संस्थागत परिवेश, संसाधनों की उपलब्धता तथा शैक्षिक अनुभव शिक्षक-प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं (भटनागर एंड दास, 2014)। इस दृष्टि से केन्द्रीय एवं राज्य विश्वविद्यालयों के बीच तुलनात्मक अध्ययन विशेष महत्व रखता है, क्योंकि इन संस्थानों में उपलब्ध सुविधाओं, प्रशिक्षण अवसरों एवं शैक्षिक वातावरण में भिन्नता पाई जाती है। उपरोक्त संदर्भों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण का अध्ययन न केवल शैक्षिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि नीतिगत एवं व्यावहारिक सुधारों के लिए भी आवश्यक है। अतः प्रस्तुत अध्ययन केन्द्रीय एवं राज्य विश्वविद्यालयों के शिक्षक-प्रशिक्षुओं के समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक विश्लेषण करने का प्रयास करता है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन (Review of Related Literature)

इस अध्ययन से सम्बंधित विभिन्न शोध पत्रो एवं उपलब्ध विषय पर अध्ययन साहित्यो का अध्ययन किया गया जिसमें से कुछ इस प्रकार हैं - प्रारंभिक अध्ययनों में एवरामिडिस और नोर्विक (2002) ने यह निष्कर्ष निकाला कि शिक्षकों का दृष्टिकोण समावेशी शिक्षा के सफल कार्यान्वयन में केंद्रीय भूमिका निभाता है। उनका अध्ययन दर्शाता है कि सकारात्मक दृष्टिकोण समावेशी प्रथाओं को अपनाने की संभावना को बढ़ाता है, जबकि नकारात्मक दृष्टिकोण इसके प्रभावी क्रियान्वयन में बाधा उत्पन्न करता है। इसी प्रकार, शर्मा, फॉरलिन और लोरमैन (2014) ने पाया कि शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। शर्मा, फॉरलिन और लोरमैन (2008) के अध्ययन में यह पाया गया कि उपयुक्त प्रशिक्षण एवं व्यावहारिक अनुभव शिक्षक-

प्रशिक्षुओं के आत्मविश्वास एवं दृष्टिकोण को सुदृढ़ करते हैं। यह निष्कर्ष इस बात को रेखांकित करता है कि केवल सैद्धांतिक ज्ञान पर्याप्त नहीं है, बल्कि अनुभवात्मक अधिगम (experiential learning) भी आवश्यक है।

भारतीय संदर्भ में भट्टनागर और दास (2014) ने माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन किया और पाया कि यद्यपि शिक्षकों का दृष्टिकोण सामान्यतः सकारात्मक है, तथापि संसाधनों की कमी एवं प्रशिक्षण की अपर्याप्तता प्रमुख बाधाएँ हैं। इसी क्रम में दास और कट्टुमुरी (2011) ने यह इंगित किया कि समावेशी शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए नीतिगत समर्थन के साथ-साथ शिक्षकों की तैयारी भी अत्यंत आवश्यक है। सुब्बान और शर्मा (2006) के अनुसार, शिक्षकों का दृष्टिकोण उनकी मान्यताओं, अनुभवों एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि से प्रभावित होता है। उनका अध्ययन यह दर्शाता है कि जिन शिक्षकों को समावेशी शिक्षा का पूर्व अनुभव होता है, वे अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदर्शित करते हैं। अहसान, शर्मा और डेपल (2012) ने बांग्लादेशी संदर्भ में शिक्षक-प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण का अध्ययन करते हुए पाया कि समुचित प्रशिक्षण एवं संसाधनों की उपलब्धता दृष्टिकोण को सकारात्मक दिशा में प्रभावित करती है। इसी प्रकार, सावोलाइनन, एंगेलब्रेख्ट, नेल और मालिनेन (2012) ने यह निष्कर्ष निकाला कि शिक्षक-प्रभावकारिता (teacher efficacy) समावेशी दृष्टिकोण का एक महत्वपूर्ण पूर्वानुमानक (predictor) है।

लोरमैन, अर्ल, शर्मा और फोरलिन (2007) ने यह दर्शाया कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शिक्षक-प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण में विविधता पाई जाती है, जो सांस्कृतिक एवं संस्थागत संदर्भों पर निर्भर करती है। यह निष्कर्ष विभिन्न प्रकार के विश्वविद्यालयों के तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता को रेखांकित करता है। Malinen, Savolainen और Xu (2012) के अध्ययन में यह पाया गया कि शिक्षक-प्रशिक्षुओं की आत्म-प्रभावकारिता (self-efficacy) एवं समावेशी शिक्षा के प्रति उनके दृष्टिकोण के बीच सकारात्मक संबंध विद्यमान होता है। अर्थात् जिन शिक्षक-प्रशिक्षुओं में अपनी शिक्षण क्षमता के प्रति अधिक विश्वास होता है, वे समावेशी कक्षा परिस्थितियों को अधिक प्रभावी ढंग से संभालने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं।

इस निष्कर्ष को जॉर्डन, श्वार्टज़ और मैकगी-रिचमंड (2009) के अध्ययन द्वारा भी समर्थन मिलता है, जिसमें यह दर्शाया गया कि शिक्षकों की मान्यताएँ एवं उनकी कक्षा प्रबंधन शैली समावेशी प्रथाओं के क्रियान्वयन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। इन निष्कर्षों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि समावेशी शिक्षा के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए केवल सकारात्मक दृष्टिकोण पर्याप्त नहीं है, बल्कि शिक्षकों में आत्म-विश्वास एवं उपयुक्त शिक्षण कौशल का विकास भी आवश्यक है। इसी संदर्भ में शर्मा और याकूब (2016) ने यह सुझाव दिया कि शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में समावेशी शिक्षा को एक अनिवार्य घटक के रूप में शामिल किया जाना चाहिए, ताकि भावी शिक्षक विविध कक्षा परिस्थितियों के लिए आवश्यक दक्षताओं से युक्त हो सकें। इस विचार को वैश्विक स्तर पर भी समर्थन प्राप्त होता है, जैसा कि यूनेस्को(2017) की रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि समावेशी शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए न केवल नीतिगत सुधार आवश्यक हैं, बल्कि शिक्षक-तैयारी कार्यक्रमों में भी व्यापक एवं संरचनात्मक परिवर्तन किए जाने चाहिए।

इसके अतिरिक्त, फ्लोरियन और ब्लैक-हॉकिन्स (2011) ने समावेशी शिक्षण पद्धतियों का विश्लेषण करते हुए यह पाया कि प्रभावी समावेशन के लिए शिक्षकों द्वारा विविध एवं लचीली शिक्षण रणनीतियों का उपयोग आवश्यक है, जिससे विभिन्न क्षमताओं एवं आवश्यकताओं वाले सभी विद्यार्थियों की सहभागिता सुनिश्चित की जा सके। इस दृष्टिकोण को ह्वांग और इवांस (2011) के अध्ययन से भी समर्थन मिलता है, जिसमें यह स्पष्ट किया गया कि शिक्षकों की सकारात्मक धारणा के साथ-साथ उनका तकनीकी कौशल, विशेषकर सहायक तकनीकों (assistive technologies) का उपयोग, समावेशी शिक्षा की प्रभावशीलता को बढ़ाता है। इसी क्रम में शर्मा और सोकल (2015) ने यह पाया कि जब शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में समावेशी शिक्षा को समुचित रूप से समाहित किया जाता है, तो शिक्षक-प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण में उल्लेखनीय सुधार होता है, जिससे वे विविध कक्षा परिस्थितियों के प्रति अधिक संवेदनशील एवं तैयार हो पाते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता (Need of the Study)

उपरोक्त साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण कई कारकों से प्रभावित होता है, जैसे—प्रशिक्षण, संसाधन, अनुभव, आत्म-प्रभावकारिता एवं संस्थागत परिवेश। तथापि, केन्द्रीय एवं राज्य विश्वविद्यालयों के शिक्षक-प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित है। यही शोध-अंतर (research gap) प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता एवं प्रासंगिकता को स्थापित करता है। इसके अतिरिक्त, विभिन्न प्रकार के विश्वविद्यालयों—विशेषकर केन्द्रीय एवं राज्य विश्वविद्यालयों—के बीच संसाधनों, प्रशिक्षण सुविधाओं, शैक्षिक वातावरण तथा अभिगम/अनुभव (exposure) में अंतर पाया जाता है। यह अंतर शिक्षक-प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकता है, किन्तु इस विषय पर तुलनात्मक अध्ययन सीमित संख्या में उपलब्ध हैं। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि केन्द्रीय एवं राज्य विश्वविद्यालयों के शिक्षक-प्रशिक्षुओं के समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए, ताकि यह ज्ञात किया जा सके कि विभिन्न संस्थागत परिवेश किस प्रकार उनके दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन न केवल शैक्षिक शोध में योगदान देगा, बल्कि नीति-निर्माताओं एवं शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों के लिए भी उपयोगी सुझाव प्रदान करेगा, जिससे समावेशी शिक्षा को अधिक प्रभावी ढंग से लागू किया जा सके।

समस्या का कथन (Statement of the Problem)

"केन्द्रीय विश्वविद्यालय एवं राज्य विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन"

शोध के उद्देश्य (Objective of the Study)

1. केन्द्रीय विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षकों के समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
2. राज्य विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षकों के समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
3. केन्द्रीय एवं राज्य विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षकों के दृष्टिकोण में अंतर का तुलनात्मक विश्लेषण करना।

प्रयुक्त शोध विधि (Research Methodology)

प्रस्तावित अध्ययन के लिए शोधकर्ता द्वारा वर्णनात्मक शोध विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण अभिकल्प का प्रयोग किया गया है ।

जनसंख्या एवं न्यादर्श (Population and Sample)

प्रस्तावित अध्ययन के जनसंख्यिकी में उत्तर प्रदेश के लखनऊ में स्थित बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय एवं लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षकों को शामिल किया गया है । साधारण याद्दच्छिक चयन प्रविधि का प्रयोग करके कूल १०० प्रशिक्षु शिक्षकों का चयन किया गया है।

शोध उपकरण (Research Tool)

समावेशी शिक्षा के प्रति प्रशिक्षु-शिक्षक दृष्टिकोण को मापने के लिए डॉ. विशाल सूद और डॉ. आरती आनंद द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत मापनी का उपयोग किया गया जो वर्ष 2025 में निर्मित है।

सांख्यिकीय तकनीकें (Statistical Techniques)

ऑकडों का विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय

- औसत (Mean)
- मानक विचलन (Standard Deviation)
- विकृति (Skewness) एवं अधिशिखरता (Kurtosis)
- इंडिपेंडेंट सैंपल्स टी-टेस्ट

आकडों का विश्लेषण एवं व्याख्या (Data Analysis and Interpretation)

केन्द्रीय विश्वविद्यालय

सारणी संख्या : 1 केन्द्रीय विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षकों के दृष्टिकोण का विश्लेषण

विश्वविद्यालय	संख्या	माध्य	मानक विचलन
केन्द्रीय विश्वविद्यालय	50	121.14	9.80

व्याख्या (Interpretation)

- प्रस्तुत सारणी में केन्द्रीय विश्वविद्यालय के 50 प्रशिक्षु शिक्षकों के समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का सांख्यिकीय विश्लेषण दिया गया है। सारणी के अनुसार— कुल नमूना (N) = 50, माध्य (Mean) = 121.14 और मानक विचलन (Standard Deviation) = 9.80
- इससे स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण उच्च (सकारात्मक) है, क्योंकि माध्य मान अपेक्षाकृत अधिक है।
- मानक विचलन (9.80) यह दर्शाता है कि प्रतिभागियों के उत्तरों में बहुत अधिक विचलन नहीं है, अर्थात अधिकांश प्रशिक्षु शिक्षकों के दृष्टिकोण में समानता (consistency) पाई जाती है।

निष्कर्ष रूप में, कहा जा सकता है कि केन्द्रीय विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षक समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूक, सकारात्मक एवं अनुकूल दृष्टिकोण रखते हैं, जो समावेशी शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए एक शुभ संकेत है।

राज्य विश्वविद्यालय

सारणी: 2 राज्य विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षकों के दृष्टिकोण का विश्लेषण

विश्वविद्यालय	संख्या	माध्य	मानक विचलन
राज्य विश्वविद्यालय	50	111.80	20.50

व्याख्या (Interpretation)

- प्रस्तुत सारणी में राज्य विश्वविद्यालय के 50 प्रशिक्षु शिक्षकों के समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का सांख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। सारणी के अनुसार— कुल नमूना (N) = 50, माध्य (Mean) = 111.80 और मानक विचलन (Standard Deviation) = 20.50

- इससे स्पष्ट होता है कि राज्य विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण मध्यम से सकारात्मक स्तर का है, क्योंकि औसत मान अपेक्षाकृत अच्छा है, लेकिन केन्द्रीय विश्वविद्यालय की तुलना में कम है।
- मानक विचलन (20.50) अपेक्षाकृत अधिक है, जो यह दर्शाता है कि प्रतिभागियों के उत्तरों में अधिक विविधता (variation) पाई जाती है। अर्थात सभी प्रशिक्षु शिक्षकों के दृष्टिकोण एक समान नहीं हैं, बल्कि उनमें काफी अंतर देखा जाता है।

निष्कर्ष रूप में, कहा जा सकता है कि राज्य विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण सामान्यतः सकारात्मक है, किन्तु उसमें एकरूपता का अभाव है। अतः उनके दृष्टिकोण को और अधिक सुदृढ़ एवं समान बनाने के लिए प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

केन्द्रीय एवं राज्य विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षकों के दृष्टिकोण में अंतर

सारणी : 3 केन्द्रीय एवं राज्य विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षकों के दृष्टिकोण का विश्लेषण

विश्वविद्यालय	संख्या	माध्य	मानक विचलन	माध्य अंतर	t-परीक्षण
केन्द्रीय विश्वविद्यालय	50	121.14	9.80	10.7	2.85
राज्य विश्वविद्यालय	50	111.80	20.50		

0.05 स्तर पर सार्थकता

तालिका 4 में प्राप्त t का गणितीय मान (2.85) 0.05 के सार्थक स्तर पर सारणी मान 1.976 से अधिक है, जो यह दर्शाता है कि राज्य और केन्द्रीय विश्वविद्यालय के बीच का अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों समूहों के दृष्टिकोण में पाया गया अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक (statistically significant) है, अर्थात यह अंतर संयोगवश नहीं है।

सारणी: 4 केंद्रीय एवं राज्य विश्वविद्यालयों का माध्य अंक

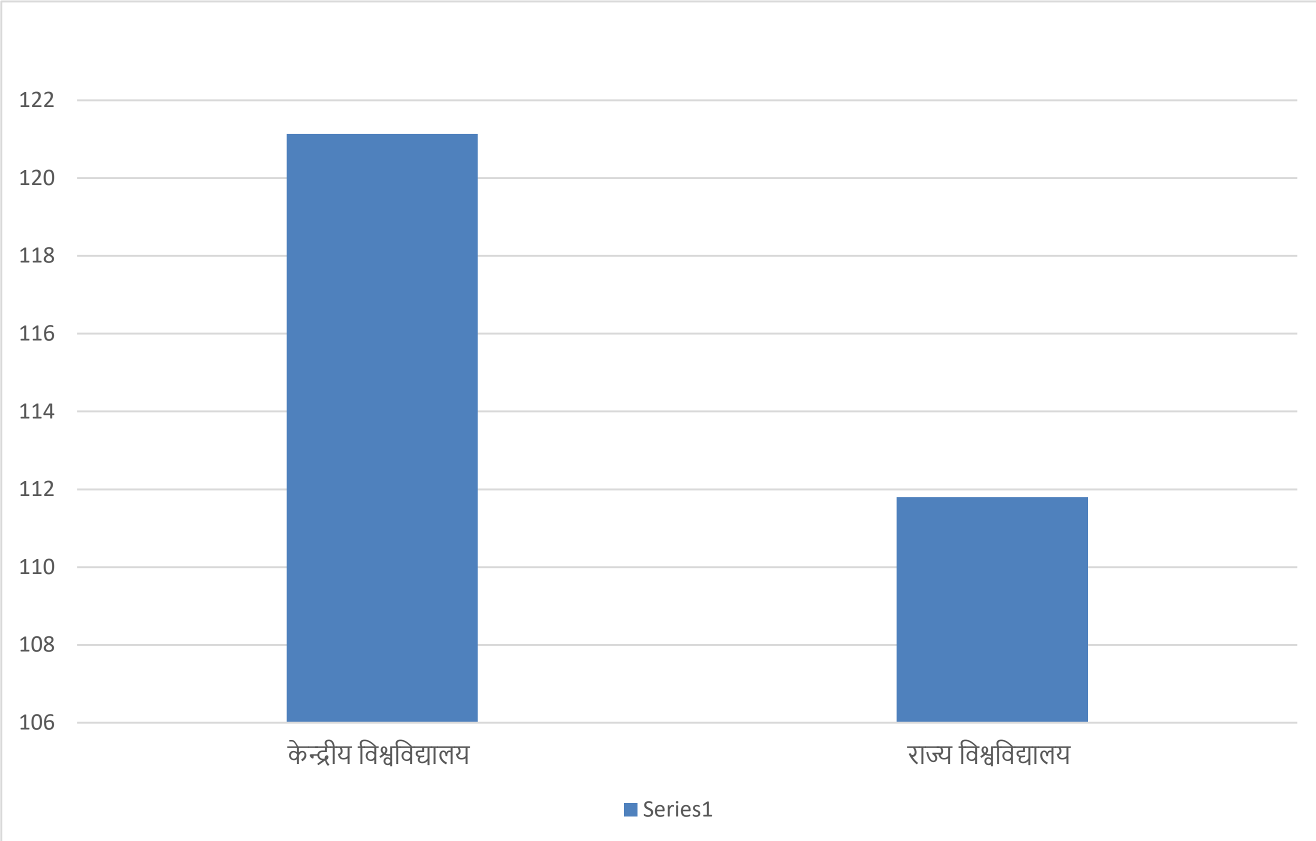

माध्य	**121.14**	**111.80**

व्याख्या (Interpretation)

- प्रस्तुत स्तंभ आरेख में केन्द्रीय एवं राज्य विश्वविद्यालयों के प्रशिक्षु शिक्षकों के समावेशी शिक्षा के प्रति औसत अंक (Mean Score) की तुलना दर्शाई गई है। चार्ट के अनुसार—केन्द्रीय विश्वविद्यालय का माध्य 121.14 और राज्य विश्वविद्यालय का माध्य 111.80 है।
- इन आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षकों का औसत स्कोर राज्य विश्वविद्यालय के प्रशिक्षुओं की तुलना में अधिक है, जिससे यह संकेत मिलता है कि उनका समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण अधिक सकारात्मक है।
- निष्कर्ष रूप में, कहा जा सकता है कि केन्द्रीय एवं राज्य विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षकों के समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में वास्तविक एवं महत्वपूर्ण अंतर पाया जाता है, तथा केन्द्रीय विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षक इस दृष्टि से अधिक सकारात्मक पाए गए।

शोध के प्रमुख परिणाम (Main Findings of Research)

प्रस्तुत अध्ययन में केन्द्रीय एवं राज्य विश्वविद्यालयों के प्रशिक्षु शिक्षकों के समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का विश्लेषण किया गया। प्राप्त आंकड़ों के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख परिणाम सामने आए—

1. केन्द्रीय विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण उच्च एवं सकारात्मक पाया गया। उनका औसत (Mean = 121.14) अधिक है, जो सकारात्मक सोच को दर्शाता है।
2. राज्य विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षकों का दृष्टिकोण भी समावेशी शिक्षा के प्रति सकारात्मक पाया गया, किन्तु उनका औसत (Mean = 111.80) केन्द्रीय विश्वविद्यालय की तुलना में कम है।

3. केन्द्रीय विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षकों में मानक विचलन (SD = 9.80) कम पाया गया, जिससे उनके दृष्टिकोण में अधिक एकरूपता (consistency) का संकेत मिलता है।
4. राज्य विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षकों में मानक विचलन (SD = 20.50) अधिक पाया गया, जो यह दर्शाता है कि उनके दृष्टिकोण में अधिक भिन्नता (variation) विद्यमान है।
5. दोनों समूहों के बीच माध्य अंतर (Mean Difference = 10.7) पाया गया, जो स्पष्ट करता है कि केन्द्रीय विश्वविद्यालय के प्रशिक्षुओं का दृष्टिकोण अधिक सकारात्मक है।
6. t-परीक्षण के परिणाम (t = 2.85) 0.05 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक पाए गए, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि केन्द्रीय एवं राज्य विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षकों के दृष्टिकोण में पाया गया अंतर वास्तविक है, न कि संयोगवश।

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि दोनों ही प्रकार के विश्वविद्यालयों के प्रशिक्षु शिक्षक समावेशी शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, किन्तु केन्द्रीय विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षकों का दृष्टिकोण अधिक सुदृढ़, सकारात्मक एवं एकरूप पाया गया। हालांकि, केन्द्रीय एवं राज्य विश्वविद्यालयों के प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण में जो अंतर पाया गया, वह संभवतः उपलब्ध संसाधनों, प्रशिक्षण की गुणवत्ता, अनुभव तथा शैक्षिक वातावरण के कारण हो सकता है।

निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत अध्ययन में केन्द्रीय एवं राज्य विश्वविद्यालयों के प्रशिक्षु शिक्षकों के समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया। अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट हुआ कि दोनों ही प्रकार के विश्वविद्यालयों के प्रशिक्षु शिक्षक समावेशी शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। यह दर्शाता है कि वर्तमान समय में समावेशी शिक्षा की अवधारणा के प्रति जागरूकता एवं स्वीकार्यता बढ़ रही है। हालांकि, केन्द्रीय विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षकों का दृष्टिकोण राज्य विश्वविद्यालय के प्रशिक्षुओं की तुलना में अधिक सकारात्मक एवं सुदृढ़ पाया गया। उनके औसत अंक अधिक होने के साथ-साथ उनके उत्तरों में अधिक एकरूपता (consistency) भी देखने को मिली। इसके विपरीत, राज्य विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षकों में दृष्टिकोण तो सकारात्मक है, लेकिन उसमें विविधता (variation) अधिक पाई गई, जिससे यह संकेत मिलता है कि सभी प्रशिक्षुओं में समान स्तर की समझ एवं दृष्टिकोण विकसित नहीं हो पाया है। t-परीक्षण के परिणामों से यह भी स्पष्ट हुआ कि दोनों समूहों के बीच पाया गया अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। अतः यह अंतर वास्तविक है और इसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। अंततः, निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि समावेशी शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए केन्द्रीय विश्वविद्यालयों की तुलना में राज्य विश्वविद्यालयों में और अधिक प्रशिक्षण, जागरूकता एवं संसाधनों की आवश्यकता है, ताकि सभी प्रशिक्षु शिक्षकों में समान रूप से सकारात्मक एवं प्रभावी दृष्टिकोण विकसित किया जा सके।

संदर्भ सूची (Reference)

1. अहसन, एम. टी., शर्मा, यू., एवं डेप्पेलर, जे. (2012). बांग्लादेश में सेवा-पूर्व शिक्षकों की अनुभूत शिक्षण-प्रभावकारिता, दृष्टिकोण और समावेशी शिक्षा के प्रति चिंताओं का अन्वेषण. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ होल स्कूलिंग, 8)2(, 1–20.
2. अव्रामिडिस, ई., एवं नॉरविच, बी. (2002). समावेशन/एकीकरण के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण: साहित्य की समीक्षा. यूरोपियन जर्नल ऑफ स्पेशल नीड्स एजुकेशन, 17(2), 129–147. https://doi.org/10.1080/08856250210129056
3. ऐन्स्को, एम. (2005). समावेशी शिक्षा प्रणालियों का विकास: परिवर्तन के साधन क्या हैं? जर्नल ऑफ एजुकेशनल चेंज, 6(2), 109–124. https://doi.org/10.1007/s10833-005-1298-4

4. भटनागर, एन., एवं दास, ए. (2014). नई दिल्ली, भारत में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण. जर्नल ऑफ रिसर्च इन स्पेशल एजुकेशनल नीड्स, 14(4), 255–263. https://doi.org/10.1111/1471-3802.12016
5. बूथ, टी., एवं ऐन्स्को, एम. (2011). इंडेक्स फॉर इन्क्लूज़न: विद्यालयों में सीखने और सहभागिता का विकास (3rd ed.). Centre for Studies on Inclusive Education.
6. दास, ए., एवं कट्टुमुरी, आर. (2011). मुंबई के निजी समावेशी विद्यालयों में दिव्यांग बच्चों के अनुभव और चुनौतियाँ. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल डेवलपमेंट, 31(5), 482–488. https://doi.org/10.1016/j.ijedudev.2011.02.009
7. एंगेलब्रेक्ट, पी., नेल, एम., स्मिट, एस., एवं वैन डेवेंटर, एम. (2013). शिक्षा नीतियों का आदर्शवाद और विद्यालयों की वास्तविकताएँ: दक्षिण अफ्रीका में समावेशी शिक्षा का क्रियान्वयन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इन्क्लूसिव एजुकेशन, 17(5), 520–535. https://doi.org/10.1080/13603116.2012.654943
8. फ्लोरियन, एल., एवं ब्लैक-हॉकिन्स, के. (2011). समावेशी शिक्षण पद्धति का अन्वेषण. कैम्ब्रिज जर्नल ऑफ एजुकेशन, 41(4), 495–510. https://doi.org/10.1080/0305764X.2011.625143
9. फॉर्लिन, सी., लोरेमैन, टी., एवं शर्मा, यू. (2014). शिक्षक शिक्षा में समावेशी शिक्षा: शोध की समीक्षा. एशिया-पैसिफिक जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन, 42(2), 121–133. https://doi.org/10.1080/1359866X.2014.906563
10. भारत सरकार. (2009). बच्चों का निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009.
11. ह्वांग, वाई. एस., एवं इवांस, डी. (2011). समावेशन के प्रति दृष्टिकोण: विश्वास और व्यवहार के बीच अंतर. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ स्पेशल एजुकेशन, 26(1), 136–146.
12. जॉर्डन, ए., श्वार्ट्ज, ई., एवं मैकघी-रिचमंड, डी. (2009). समावेशी कक्षाओं के लिए शिक्षकों की तैयारी. टीचिंग एंड टीचर एजुकेशन, 25(4), 535–542. https://doi.org/10.1016/j.tate.2009.02.010
13. लोरेमैन, टी., अर्ल, सी., शर्मा, यू., एवं फॉर्लिन, सी. (2007). समावेशी शिक्षा के प्रति सेवा-पूर्व शिक्षकों की भावनाओं, दृष्टिकोण और चिंताओं को मापने हेतु उपकरण का विकास. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ स्पेशल एजुकेशन, 22(2), 150–159.
14. शिक्षा मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार.
15. मालिनेन, ओ. पी., सावोलाइनन, एच., एवं शू, जे. (2012). बीजिंग के सेवारत शिक्षकों की आत्म-प्रभावकारिता और समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण. टीचिंग एंड टीचर एजुकेशन, 28(4), 526–534. https://doi.org/10.1016/j.tate.2011.12.003
16. सावोलाइनन, एच., एंगेलब्रेक्ट, पी., नेल, एम., एवं मालिनेन, ओ. पी. (2012). समावेशी शिक्षा में शिक्षकों के दृष्टिकोण और आत्म-प्रभावकारिता को समझना. यूरोपियन जर्नल ऑफ स्पेशल नीड्स एजुकेशन, 27(1), 51–68. https://doi.org/10.1080/08856257.2011.613603
17. शर्मा, यू., फॉर्लिन, सी., एवं लोरेमैन, टी. (2008). प्रशिक्षण का सेवा-पूर्व शिक्षकों के दृष्टिकोण और चिंताओं पर प्रभाव. जर्नल ऑफ रिसर्च इन स्पेशल एजुकेशनल नीड्स, 8(1), 12–21. https://doi.org/10.1111/j.1471-3802.2007.00089.x
18. शर्मा, यू., एवं जैकब्स, डी. (2016). समावेशी कक्षाओं में पढ़ाने के लिए सेवारत शिक्षकों के इरादों का पूर्वानुमान. टीचिंग एंड टीचर एजुकेशन, 55, 206–217. https://doi.org/10.1016/j.tate.2016.01.004
19. शर्मा, यू., एवं सोकाल, एल. (2015). शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम का सेवा-पूर्व शिक्षकों के समावेशन संबंधी विश्वासों पर प्रभाव. टीचिंग एंड टीचर एजुकेशन, 50, 1–10. https://doi.org/10.1016/j.tate.2015.04.004
20. स्ली, आर. (2011). अनियमित विद्यालय: बहिष्करण, स्कूली शिक्षा और समावेशी शिक्षा. Routledge.
21. सुब्बन, पी., एवं शर्मा, यू. (2006). विक्टोरिया, ऑस्ट्रेलिया में प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति धारणाएँ. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ स्पेशल एजुकेशन, 21(1), 42–52.
22. यूनेस्को. (2017). शिक्षा में समावेशन और समानता सुनिश्चित करने हेतु मार्गदर्शिका. यूनेस्को.